

पवान प्रवाह

सत्य का प्रवाह सतत् प्रवाह

डाक पंजीयन संख्या GPO LW/NP-106/2015-17

वर्ष 03 अंक 10 लखनऊ। सोमवार 28 से 04 दिसम्बर-2016

e-mail-pawanprawah@gmail.com

मूल्य : तीन रुपये पृष्ठ-16

10

लखनऊ। सा. सोमवार 28 से 04 दिसम्बर-2016

सृजन प्रवाह

 www.pawanprawah.com
 e-mail-pawanprawah@gmail.com

ग्लोबलवार्मिंग की मार से भारतवर्ष के अत्याधिक प्रदेश शीतकालीन लहर की चपेट में आना सम्भावित!



लेखक डॉ. भरत राज सिंह
 स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज के महानिदेशक एवं वैदिक विज्ञान केन्द्र के अध्यक्ष हैं

एक तरफ हम ग्लोबल वार्मिक के विभिन्न अप्रत्यासित घटनाओं के कारण बाढ़, महामारी व वायु प्रदूषण से उबर नहीं पाए हैं। अपितु इस वर्ष भारतवर्ष का विभिन्न क्षेत्रों में अत्यधिक शीतकालीन लहर की सम्भावना से नाकारा नहीं जा सकता है।

डॉ. भरत राज सिंह वरिष्ठ प्रयावरणविद व स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज, लखनऊ के महानिदेशक हैं, का कहना है की इस वर्ष शीत लहर की मार अधिक होगी तथा भारत के विभिन्न क्षेत्र इससे मार्च क्या अप्रैल 2017 तक प्रभावित रहेंगे। उनका आंकलन है कि अभी से भारतवर्ष के ओडिशा, तेलंगाना व महाराष्ट्र में निचला तापमान 10-12 डिग्री सेंटीग्रेड तक आ चुका है। यह भी सम्भावना भारतवर्ष के मेट्रोलोजी विभाग द्वारा आंकी जा रही है कि दिसम्बर 2016 से फरवरी 2017 तक शीतलहर तथा ग्रीष्म ऋतु आभाष अप्रैल 2017 से लगभग 0.5 से 1 डिग्री सेंटीग्रेड



अधिक महसूस किया जायेगा परन्तु इनके कारणों का कोई ठोस आधार उनके पास नहीं है। डॉ. सिंह बताते हैं कि 2015 की शीतकालीन समय गर्म गुजरी थी और अभी इस वर्ष ठंडक पड़ना शुरू हो गयी है। उनके अनुसार यह नीनों के कमजोर रहने के कारण ही हो रहा है। तथा यह भी उनका अनुमान है कि यदि ठण्ड का मौसम थोड़ा गरम रहता तो फाग में कमी आ जाती। परन्तु जिस तरीके से ठण्ड ने अपना आगाज दस्तक दी है इस वर्ष 4-6 डिग्री सेंटीग्रेड तापमान और नीचे शीतकाल में जाने की सम्भावना महाराष्ट्र व तेलंगाना जनपद अधिक स्थानों पर रहेगा। इस समय मेढक में 10 डिग्री सेंटीग्रेड तापमान आ चुका है और अभी वर्तमान में पूना में सबसे कम तापमान 9.9 डिग्री सेंटीग्रेड रिकॉर्ड किया गया है। ओडिशा के फुलबानी में

7.6 डिग्री सेंटीग्रेड तथा भवानीपटना व कालाहांडी में 8.7 डिग्री सेंटीग्रेड तापमान आ चुका है। इसके विपरीत हिमांचल प्रदेश के पहाड़ी इलाकों जैसे शिमला, धर्मशाला व नहान में सामान्य से 3-5 डिग्री सेंटीग्रेड अधिक 11.8 से 12.8 डिग्री सेंटीग्रेड महसूस किया जा रहा है। इस पर आई.आई.टी. मेट्रोलोजी, पूना द्वारा शोध किया जा रहा है की आगे की स्थिति क्या होगी। डॉ. सिंह का मानना है कि पहाड़ी इलाकों में ग्लोबलवार्मिंग के पिछले प्रभावों से ग्लेशियर की चट्टानें बहुत अधिक पिघल चुकी हैं तथा शीतकालीन मौसम में इनमें अधिक जमाव की संभावना अधिक नहीं है जो भी बर्फबारी होगी भी वह ग्लेशियर के तापमान के समतुल्य कम अर्थात् नीचे होने से बर्फ उस पर जमेगी नहीं बल्कि यह मैदानी इलाकों में हवा के रुख के अनुसार दिल्ली, उत्तर प्रदेश व मध्यप्रदेश



का बहुत सा हिस्सा ठण्ड से अधिक प्रभावी होगी और वहां पर ठण्ड का मौसम मार्च/अप्रैल 2017 बढ़ने की पूर्ण सम्भावना है। अभी समुद्र से सटे क्षेत्रीय इलाकों में जहां अत्यधिक तूफानी वारिश वर्षाऋतु में हुई है वहां पर जलवायु में जल की बूंद (Humidity) का प्रभाव रहने से शीतकालीन मौसम शुरू होते ही जहां-जहां छोटे पहाड़ी क्षेत्र हैं वहां पर हवा में दबाव कम होते ही रात व दिन में तापमान एकाएक कम हो रहा है जिसका जिक्र मौसम वैज्ञानिक लीनो के पिछले बारिश के मौसम में कमजोर होने का कारण बता रहे हैं। डॉ. सिंह पुनः हिमालय के क्षेत्रों में उत्तरांचल, हिमांचल व जम्मू-कश्मीर के पहाड़ी क्षेत्रों व आसपास इलाकों को अगली बारिश के मौसम की शुरुआत में सावधान करना चाहते हैं कि आने वाला समय पिछले

दैविक घटनाओं से अधिक भयावह होगा। इनका आंकलन अमरीकी न्यूयार्क क्षेत्र में तुफानों से सितम्बर 2012 की प्रकाशित किताब जो क्रोतिया में छपी थी और घटना 31 अक्टूबर 2012 में सैंडी तूफान आने से प्रभावित हुयी थी। जिसमें 15 दिन बिजली-पानी, हवाई यात्रा बंद रही। उसके उपरांत ही 2015 में इनकी जलवायु-परिवर्तन की किताब का एक अंश अमरीका में हाई स्कूल के कोर्स में सम्मिलित किया गया है। आइये ग्लोबलवार्मिंग के कारणों का चिंतन करे और इसको कम करने के उपायों पर शीघ्रता से काम कर, विश्व में जनमानस व जीव जन्तुओं को बचाने का संकल्प लें तथा पृथ्वी जो मां तुल्य है, उसके अपयवों का अप्रत्याशित दोहन रोके।